महामत कहे ईमान इस्क की, सुक्र गरीबी सबर।
इन बिध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर।। १२ ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्हें अपने धनी के चरणों को प्राप्त करना हो, वह ईमान और इश्क के लिए गरीबी और नम्रता को जैसे भी धारण कर सके, तैसे करे।

॥ प्रकरण ॥ १०२ ॥ चौपाई ॥ १५१५ ॥

राग श्री गौड़ी

जो तूं चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम।
साध जाने तोको दुनियां, वह तो साधों करी हराम।। १ ।।

यदि तुम वैरागी बनकर भी मान-मर्यादा की चाहना रखते हो, तो दुनियां वाले तुम्हें साधु जरूर समझेंगे। वह वास्तव में, तुम हो नहीं, क्योंकि साधु लोग मान, प्रतिष्ठा को बुरा समझकर छोड़ देते हैं।

मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान।। २ ।।

जो मान-मर्यादा धनी के ध्यान करने में रुकावट डालती है उस प्रतिष्ठा को जूतों से ठुकरा दो। यह प्रतिष्ठा ही दज्जाल का रूप है जो धनी की पहचान नहीं करने देता।

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत।
तूं जिन देखे तिन को, ले अपनी अर्स खिलवत।। ३ ।।

दुनियां में कोई भला कहे या बुरा, उनकी तरफ मत देखो। तुम श्री राजजी के चरणों में ध्यान लगाओ।

दिल दलगीरी छोड़ दे, होत तेरा नुकसान।
जानत है गोविंद भेड़ा, याको पीठ दिए आसान।। ४ ।।

अपने दिल से संसार की आशा को छोड़ दो। इससे तुम्हारा नुकसान होता है। यह संसार मायावी मण्डल है। इसको सहज ही छोड़ दो। यही उपाय है।

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत।
ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत।। ५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं दुबारा इस माया की तरफ तुम मत देखना। परमधाम में जहां तुम्हारी परआतम है, वहां चलने में देरी हो रही है।

॥ प्रकरण ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥ १५२० ॥

कयामत आई रे साथ जी, कयामत आई।
वेद कतेब पुकारत आगम, जो क्यों न देखो मेरे भाई।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! दुनियां के कायम होने का वह समय आ गया है जिसके लिए वेद और कतेब भविष्यवाणी कर रहे थे। अब उसका विचार तुम क्यों नहीं करते?

आए स्यामाजीएं मोहे यों कह्या, ए खेल किया तुम कारन।
तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन।। २ ।।

श्यामाजी ने आकर मुझे कहा कि यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। तुम खेल देखने आए हो। मैं तुम्हें बुलाने आई हूं।

Nijanand App

कागद आया वतन का, कासद होए ल्याए फुरमान।
आया खातिर अपने, देने को ईमान।। ३ ।।

रसूल साहब डाकिया बनकर तुम्हारे घर से फरमान (कुरान) लाए हैं। वह आपको ईमान देने के लिए आए हैं।

अग्यारे सै साल का, आए साखें लिखी आगम।
माहें अनुभव लिख्या अपना, सो पोहोंचाया खसम।। ४ ।।

कुरान में पहले से ही ग्यारह सौ वर्ष पहले की भविष्यवाणी कही है। उसमें रसूल साहब के अनुभव को बताने को लिखा है। श्री राजजी महाराज ने ऐसा ज्ञान भेजा।

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान।
सो साहेब काजी होए के, जाहेर करसी कुरान।। ५ ।।

जिस धाम-धनी को किसी ने देखा, सुना नहीं है वह खुद काजी बनकर कुरान के भेद खोलेंगे।

जेते वचन कुरान में, सो सब स्यामा जी दई साख।
सो सारे इन लीला के, कहूं केते हजारों लाख।। ६ ।।

जो वचन कुरान में लिखे हैं वही श्यामाजी ने भी बताये। इस तरह से इस जागनी लीला के हजारों लाखों प्रमाण हैं।

सो कुंजी स्यामा जी दई, हकीकत वतन।
माएने खुले सब तिन से, जो छिपे हुते बातन।। ७ ।।

परमधाम की हकीकत का वर्णन करने वाली ज्ञान की वह कुंजी (तारतम) श्यामाजी ने लाकर दी जिससे कुरान के सब छिपे भेद खुल गए।

और भी फुरमान में लिख्या, कोई खोल ना सके किताब।
सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब।। ८ ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि इसके भेदों को श्री प्राणनाथजी ही खोलेंगे जिनको इमाम मेंहदी का खिताब प्राप्त है इसे और कोई नहीं खोल सकेगा।

वसीयत नामे आए दरगाह सें, जाहेर करी कयामत।
ए हकीकत तुम पर लिखी, देखाए दिन सरत।। ९ ।।

मक्का से वसीयतनामों के आने से कयामत जाहिर हुई। उनमें कयामत की हकीकत और कयामत का दिन तुमको बताया है।

या वेद या कतेब, सब आए तुम खातिर।
सब साख तुमारी देवहीं, जो देखो नीके कर।। १० ।।

वेद हैं या कतेब, सब तुम्हारे वास्ते आए हैं। यदि अच्छो तरह से विचार करके देखो तो सब तुम्हारी गवाही देते हैं।

साख देवे सब दुनियां, वैराट चौदे भवन।
समझे सारे देखहीं, जिनका दिल हुआ रोसन।। ११ ।।

चौदह लोकों की सारी दुनियां तुम्हारी गवाही देती है और ब्रह्मसृष्टियां जिनकी आत्मा जागृत हो गई है, वह सब देख रही हैं।

Nijanand App

ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत।
आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत।। १२ ।।

यह सब गवाहियां कहती हैं कि कयामत नजदीक आ गई है। तुम भी सावचेत क्यों नहीं होते, जबकि कयामत सिर पर आ गई है?

साथ जी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोंचत।
चेत सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत।। १३ ।।

श्री महामतिजी पुकार कर कहते हैं, हे साथजी! चेत (जाग) सको तो चेतो। माया के विकारों को छोड़कर दिल निर्मल किए बिना अखण्ड घर न जा सकेंगे।

॥ प्रकरण ॥ १०४ ॥ चौपाई ॥ १५३३ ॥

राग श्री

मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्ट को, दिल की दीजो बताए।।। टेक ।।
जो कोई ब्रह्म सृष्ट का, सो देखियो दिल विचार।
कहियो तेहेकीक करके, जिनों जो किया करार।। १ ।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टियों से दिल की बातें पूछ रहे हैं। वह कहते हैं कि जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो, वह विचार करें, जिन्होंने जो निश्चय किया है, वह बताओ।

सब कोई बात विचारियो, देख अपनी अपनी अकल।
सृष्ट तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल।। २ ।।

सब कोई इस बात का अपनी अक्ल से विचार करना कि जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि एक-दूसरे से मिलकर संसार में कैसे रहती हैं?

सो तीनों अब जुदे होएसी, है हाल तुम्हारा क्यों कर।
दिन एते जान्या त्यों किया, अब आए पोहोंची आखिर।। ३ ।।

अब यह तीनों कयामत के समय में अलग-अलग हो जाएंगी। इतने दिन तक तुमने जैसा चाहा वैसा किया। अब तुम्हारा क्या हाल है?

पूजे परमेश्वर करके, दिल में राखें दोए।
तिन कारन पूछत हों, कौन विध याकी होए।। ४ ।।

जो मुझे प्राणनाथ करके पूजते हैं और दिल में दुविधा रखते हैं। इस कारण पूछती हूं कि अब उनका क्या हाल होगा?

कहें परमेश्वर मुख थें, दिल चोरावें जे।
दगा देवें मांहें दुस्मन, क्या नहीं देखत हो ए।। ५ ।।

मुझे अपने मुख से प्राणनाथ कहते हैं और दिल की बात छिपाते हैं। सुन्दरसाथ में बैठकर दगा देते हैं, दुश्मनी करते हैं। क्या इस बात को नहीं देखते हो।

कहावत हैं ब्रह्म सृष्ट में, धनीसों छिपावें बात।
दिल की करें औरन सों, ए कौन सृष्ट की जात।। ६ ।।

अपने को ब्रह्मसृष्टि कहते हैं और धनी से बातें छिपाते हैं। दिल की बातें औरों को बताते हैं। इनको किस सृष्टि का माना जाए?

Nijanand App